वर्ष -2 अंक 7 जुलाई 2018
जे-7 श्रीरामनगर रायपुर छ.ग.)

आर.एन.आई पंजीकरण क्रमांक
CHHHIN/2017/72506

# किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा , शेख अजहरुद्दीन

प्यारे बच्चों,

स्कूल ख़ुल गए हैं. आप सब स्कूल जाने लगे होंगे. नई कक्षा, नए मित्र और नई पुस्तकें आपको मिले होंगे. कुछ बच्चों को नए शिक्षक भी मिले होंगे और कुछ तो नए स्कूल में भी गए होंगे. किलोल का नया अंक आपके हाथ में देकर मुझे बेहद खुशी हो रही है. प्रत्येक अंक की तरह इस अंक में भी आपकी रचनाएं हैं. किलोल के लिये हमें बड़ी अच्छी रचनाएं मिल रही हैं. यदि आप संस्मरण, यात्रा वृतांत और कक्षा में किए गए नवाचारों के बारे में भी हमें लिख भेजें तो उन्हें प्रकाशित करना हमें अच्छा लगेगा. अपनी रचनाएं dr.alokshukla@gmail.com पर ई-मेल व्दारा भेजते रहिये. किलोल के बारे में आप क्या सोचते हैं यह भी यदि आप हमें लिखें तो पत्रिका को बेहतर बनाने में सहायता मिलेगी. हमेशा की तरह यह अंक भी http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. सभी बच्चों को मेरा प्यार.

आलोक शुक्ला

## मगरमच्छ का समोसा

लेखक - दीपक कुमार कंवर

तालाब के किनारे एक मगरमच्छ छोटी सी दुकान चलाता था, जहां वह समोसा व चाय बेचा करता था. वहीं पास के पेड़ पर एक बंदर रहता था. मगरमच्छ जब भी कहीं बाहर जाता तो मौके का फायदा उठाकर बंदर उसकी दुकान से समोसा चुराकर खा जाता था. इससे मगरमच्छ बहुत परेशान रहता था. मगरमच्छ ने सोचा कि कोने में छुपकर बंदर को पकड़ ले, परन्तु बंदर सूंघकर मगरमच्छ का पता कर लेता था और सामने नहीं आता था. मगरमच्छ ने समोसे में नमक मिर्च ज्यादा डाली फिर भी बंदर समोसे खा गया. मगरमच्छ ताला बंद करके बाहर जाने लगा, पर बंदर पत्थर से ताला तोड़ देता था.

एक दिन मगरमच्छ ने पास मे रहने वाले खरगोश को अपनी समस्या बताई. खरगोश ने मगरमच्छ को एक उपाय बताया. योजना के मुताबिक एक दिन मगरमच्छ ने छोटे-छोटे पत्थर डालकर समोसे बनाये. बंदर को बहुत जोर की भूख लगी थी. वह मौका देखकर समोसा लेकर कर पेड़ पर चढ़ गया. जैसे ही उसने समोसा खाया पत्थर से उसके दांत टूट गये. उस दिन से बंदर ने समोसा चुराना बंद कर दिया. मगरमच्छ भी अब सुखपूर्वक रहने लगा।

# <u>उपकार</u>

लेखक - दिलकेश मधुकर

एक राजकुमार बड़े दुष्ट स्वभाव का था. एक दिन वह बाढ़ के पानी में बहने लगा. नदी में एक लट्ठा बह रहा था. बाढ़ में फंसे हुए एक साँप और एक चूहे ने उस लट्ठे पर सवारी गाँठ ली. राजकुमार ने वह देखा तो वह भी उसे पकड़ कर तैरने लगा.

नदी के तट पर एक साधु रहता था. उसने लट्ठे पर सवार तीन प्राणियों को बहते देखा तो वह नदी में कूद पड़ा और लट्ठे को घसीट कर किनारे पर ले आया. साधू उन तीनों को अपनी झोपड़ी में ले गया. वे सर्दी से काँप रहे थे. साधू ने आग जलाकर उनकी ठंड दूर की और उन्हें भोजन कराया. उनके स्वस्थ हो जाने पर उन्हें विदा किया.

साँप ने कृतज्ञता व्यक्त की और कहा मैं पास में ही रहूँगा आपके दर्शन करता रहूँगा. मेरे पास कुछ धन है. जब आपको जितनी आवश्यकता होगी उतना देता रहूँगा. चूहे ने हाथ जोडकर कहा - “मैं आपके लिए ईधन जुटाता रहूँगा. पेड़ों की

टहनियाँ काट कर झोपड़ी के पास ढ़ेर लगा दूंगा.'' राजकुमार कृतघ्न था. उसने साधू की सहायता पर कृतज्ञता व्यक्त नहीं की. उल्टे उसे बुरा लगा कि साधू ने राजकुमार की भांति उसका सम्मान और सत्कार नहीं किया. उसने वापस जाकर आपने सैनिकों को भेजकर साधु की झोपड़ी उखाड़ कर फिंकवा दी. किसी ने सच ही कहा है कि - "उपकार भी हर किसी के साथ नहीं करना चाहिए".

# <u>चुनौती</u>

लेखिका - श्रीमती लक्ष्मी मधुकर

एक बार एक किसान परमात्मा से बड़ा नाराज हो गया. कभी बाढ़ आ जाये, कभी सूखा पड़ जाए, कभी धूप बहुत तेज हो जाए तो कभी ओले पड़ जायें. हर बार कुछ ना कुछ कारण से उसकी फसल थोड़ी ख़राब हो जाये.

एक दिन बड़ा तंग आ कर उसने परमात्मा से कहा, देखिये प्रभु, आप परमात्मा हैं, लेकिन लगता है आपको खेती-बाड़ी की ज्यादा जानकारी नहीं है. एक प्रार्थना है कि एक साल मुझे मौका दीजिये, जैसा मै चाहूं वैसा मौसम हो. फिर आप देखना मै कैसे अन्न के भण्डार भर दूंगा. परमात्मा मुस्कुराये और कहा ठीक है, जैसा तुम कहोगे वैसा ही मौसम दूंगा, मै दखल नहीं करूँगा.

किसान ने गेहूं की फ़सल बोई. जब धूप चाही, तब धूप मिली, जब पानी चाहा तब पानी बरसा. तेज धूप, ओले, बाढ़, आंधी तो उसने आने ही नहीं दी. समय के साथ फसल बढ़ी और किसान की ख़ुशी भी, क्योंकि ऐसी फसल तो आज तक नहीं हुई

थी !! किसान ने मन ही मन सोचा अब पता चलेगा परमात्मा को. बेकार ही इतने बरस हम किसानो को परेशान करते रहे.

फ़सल काटने का समय भी आया. किसान बड़े गर्व से फ़सल काटने गया. पर यह क्या ? गेहूं की एक भी बाली के अन्दर गेहूं नहीं था. सारी बालियाँ अन्दर से खाली थीं. बड़ा दुखी होकर उसने परमात्मा से कहा - प्रभु ये क्या हुआ ? तब परमात्मा बोले- ये तो होना ही था. तुमने पौधों को संघर्ष का ज़रा सा भी मौका नहीं दिया. ना तेज धूप में उनको तपने दिया, ना आंधी ओलों से जूझने दिया. बाली में गेहूं भरने के लिये प्रकृति की चुनौतियों को झेलना ज़रूरी है. आंधी, तेज बारिश, ओले आदि से संघर्ष करने पर पौधे में बल पैदा होता है. वही उसे शक्ति देता है, ऊर्जा देता है और उसकी जीवटता को उभारता है.

पौधों की तरह यदि इंसान के जीवन में कोई संघर्ष या चुनौती ना हो तो आदमी खोखला ही रह जाता है, उसके अन्दर कोई गुण नहीं आ पाता. चुनौतियाँ ही मनुष्य को सशक्त और प्रखर बनाती हैं. अगर प्रतिभाशाली बनना है तो चुनौतियाँ स्वीकार करनी ही पड़ेंगी, अन्यथा हम खोखले ही रह जायेंगे.

## कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको नीचे दी गई अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी-

## कंजूस सेठ

एक गांव में सत्यनारायण नाम का एक कंजूस सेठ रहता था. वह सभी से अपना काम मुफ्त में करवाने के लिए चालाकियाँ किया करता था. भोले भाले गांव वाले - उससे बहुत परेशान रहा करते थे.

एक दिन उस गांव में सुखसागर व रामसागर नाम के दो भाई काम की तलाश में आये. संयोगवश उन्होंने उसी सत्यनारायण सेठ से ही काम मांगा. सेठ मन ही मन खुश हुआ पर बाहरी दिखावा करते हुए बोला - चलो जाओ मेरे पास तुम्हारे करने लायक कोई काम नहीं है जो काम है. जो काम है वह तुम कर नहीं पाओगे. दोनों भाइयों को काम की अत्यंत आवश्यकता थी. दोनों ने कहा हम कर लेंगे. सेठ ने कहा यदि मेरे मन मुताबिक कार्य नहीं कर पाये तो एक माह तक तुम्हें बिना पैसे लिए काम करना होगा. दोनों भाई मान गए. सेठ ने जैसे ही तीनों काम बताए दोनों के होश उड़ गए.

पहला काम - दो जग, एक बड़ा व एक छोटा. बड़े जग को छोटे जग के अंदर डालना है. दूसरा काम - कमरे में गीला अनाज है. बिना दरवाजा खोले व अनाज को हाथ लगाए बगैर उसे धूप में सुखाना है. तीसरा काम - मेरे सर के वजन जितनी तरबूज बाजार से खरीद कर लानी है ना कम ना ज्यादा.

इस कहानी को पूरा करके हमें कुमारी कविता कोरी, श्रीमती नलिनी राय, दिलकेश मधुकर, सीमा चतुर्वेदी तथा तबरेज़ आलम ने भेजा है. क्योंकि सभी ने कहानी को एक ही प्रकार से पूरा किया है इसलिये हम उन सभी के व्दारा पूरी की गई कहानी एक साथ प्रकाशित कर रहे हैं -

## आगे की कहानी

यह तो असंभव है!", दोनों भाई एक साथ बोल पड़ते हैं.

"ठीक है तो फिर यहाँ से चले जाओ...इन तीन कामों को ना कर पाने के कारण मैं तुम दोनों को काम पर नहीं रख सकता...", सेठ ने कहा.

मक्कार सेठ की इस धोखाधड़ी से उदास हो कर दोनों दोस्त नगर से जाने लगते हैं. उन्हें ऐसे जाता देख एक चतुर पण्डित उन्हे अपने पास बुलाता है और पूरी बात समझाने के बाद उन्हें वापस सेठ पास भेजता है. सेठ के पास पहुँच दोनों भाई बोलते हैं, "सेठ जी, ठीक है एक बार कोशिश करके देख लेते हैं."

सेठ सत्यनारायण कहता है, "लेकिन शर्त याद है ना, अगर तीनों काम नहीं कर पाये तो एक माह मुफ्त में काम करना होगा."

दोनों भाई एक साथ- "हमें शर्त मंज़ूर है."

तीनो मिलकर दुकान के अन्दर गये. सुखसागर ने बड़े जग को तोड़-तोड़ कर छोटे जग के अन्दर डाल दिया. सेठ मन मारकर रह गया.

इसके बाद दोनों भाई सुखसागर और रामसागर ने मिलकर दुकान की दीवार और छत हथौड़े से तोड़ डाली, जिससे वहां हवा और धूप दोनों आने लगी, और अनाज सूख गया. सेठ और उसके आदमी देखते रह गए. किसी की भी उन्हें रोकने की हिम्मत नहीं हुई.

अब आखिरी काम बचा था. दोनों भाई तलवार ले कर सेठ के सामने खड़े हो जाते है और कहते हैं, “सेठजी आप के सिर के सही वज़न के बराबर तरबूज लाने के लिए इसे धड़ से अलग करना होगा. कृपया बिना हिले स्थिर खड़े रहें.”

सेठ की समझ में आ गया कि गरीबों का हक मारना उचित नहीं है. उसने बिना हीला हवाला किए उन दोनों को काम पर रख लिया.

शिक्षा- "बेईमानी का फल हमेशा बुरा ही होता है."

## अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

## दरजी-दरजिन

एक था दरजी, एक थी दरजिन. उनके घर कोई मेहमान आता, तो उन्हें लगता कि कोई आफत आ गई. एक बार उनके घर दो मेहमान आए. दरजी के मन में फिक्र हो गई. उसने सोचा कि ऐसी कोई तरकीब चाहिए कि ये मेहमान यहाँ से चले जाएं.

दरजी ने घर के अन्दर जाकर दरजिन से कहा, "सुनो, जब मैं तुमको गालियां दूं, तो जवाब में तुम भी मुझे गालियां देना. और जब मैं अपना गज लेकर तुम्हें मारने दौडूं तो तुम आटे वाली मटकी लेकर घर के बाहर निकल जाना. मैं तुम्हारे पीछे-पीछे दौड़ूंगा. मेहमान समझ जायेंगे कि इस घर में झगड़ा है, और वे वापस चले जाएंगे."

अब तुम जल्दी से कागज़ कलम उठाओ और यह कहानी पूरी करके हमे भेज दो. सभी अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे. कहानी भेजने का ई-मेल पता है - dr.alokshukla@gmail.com.

## चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिए दिलकेश मधुकर जी का भेजा यह चित्र दिया था -

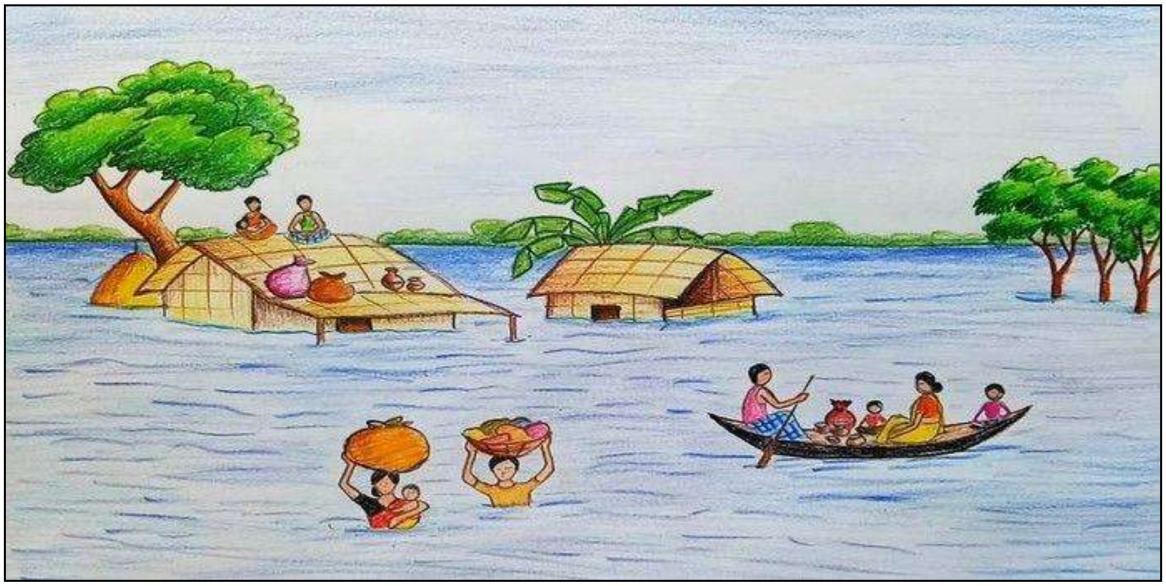

इस चित्र पर हमें 2 कहानियां प्राप्त हुई हैं जिन्हें हम प्रकाशित कर रहे हैं -

## बचाव की तैयारी

लेखिका - सीमा चतुर्वेदी

रानू के स्कूल में पेंटिंग की प्रदर्शनी लगाई गई थी. एक चित्र पर रानू की नजर ठहर गई. उसकी आंखें डबडबा आईं. शिक्षक की नजर जब रानू पर पड़ी तो वे तुरंत रानू के पास आकर प्यार से बोले - ''क्या हुआ रानू बेटे इस पेंटिंग को देख कर तुम उदास क्यों हो गईं ? तुम्हारी आंखें क्यों भर आयीं ?'' रानू बोली - ''सर,

मुझे मेरे गांव की याद आ गई. पिछली बरसात मे मेरा गांव बाढ़ के पानी में डूब गया था. मेरी प्यारी सी गाय गुनगुन भी उस बाढ़ में समा गई. हमारे खेती हुआ करती थी. खेत के बीच में ही हमारी झोपड़ी थी. पास में ही मेरे चाचा की भी झोपड़ी थी. पूरे परिवार ने मिलकर अपने हाथों से घरौंदा तैयार किया था. तीन दिन की लगातार बारिश से नदी-नाले भर गए और सैलाब बनकर हमारे गांव में घुस आये. सब बहुत परेशान हो गए. मेरा भाई, जो मुझ से दो साल बड़ा है गांव के ही स्कूल में पढ़ता था. उसे कुछ दिन पहले स्कूल में बताया गया था कि बाढ़ से पहले क्या क्या तैयारी कर रखनी चाहिए. सब लोग मिलकर जरूरी कागज, दवाई, खाने का सामान आदि पैक करके बचाव दल की नाव के सहारे बाहर सुरक्षित निकाल आये. गांव के कुछ लोग मचान के ऊपर चढ़कर पानी कम होने का इंतजार करते रहे. दो दिन बाद बाढ़ का पानी निकलने के बाद जब गांव वापस गए तो वहां अपने स्कूल बैग, कॉपी -किताब को सुरक्षित देखकर मैं खुश हो गई, जिसे मां ने निकलने स पहले झोपड़ी की सबसे ऊपर वाली खूंटी में लटका दिया था.’’

## **बाढ़**

लेखक - दिलकेश मधुकर

सपना और कल्पना दोनों ही बहुत घनिष्ट मित्र थीं. दोनों पढ़ने के लिए अपने घर से दूर एक होस्टल में रहती थीं. सपना की रुचि समाज सेवा में थी. वह निर्धन तथा बेसहारा बच्चों को खुले मैदान में बैठाकर पढ़ाती थी. कल्पना एक चित्रकार थी. वह एक अमीर पिता की इकलौती बेटी थी और आगे की पढ़ाई के लिए विदेश जाने वाली थी.

उन्हीं दिनों बहुत तेज़ बारिश के कारण बाढ़ के हालात पैदा हो गए. लगातार तीन दिनों तक वर्षा होती रही. बाढ़ पीड़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी. बहुत से गांव

बाढ़ के चपेट में थे. लोग बाढ़ से बचने के लिए घरों की छतों पर चढ़ गये. बहुत लोग सुरक्षित जगह की तलाश में नाव से या पैदल अपने बच्चों को कंधे पर उठाकर ज़रुरी सामान के साथ जा रहे थे. सपना बाढ़ पीड़ितों की सहायता में लगी थी. पंद्रह दिन बाद होस्टल लौटने सपना ने कल्पना को बताया कि उसने किस प्रकार बाढ़ पीड़ितों की मदद की थी. कल्पना ने बाढ़ पीड़ित परिवारों का एक चित्र बनाया जिसे देश विदेश में बड़ी ख्याति मिली.

कई वर्ष बाद कल्पना से सपना की मुलाकात हुई. सपना के साथ दो बच्चे भी थे. सपना ने उसी तस्वीर पर बने दोनों बच्चों की ओर इशारा करते हुए बताया कि ये वही दोनों बाढ़ पीड़ित बच्चे हैं जिनके मां बाप बाढ़ में खो गए थे. बाद में सपना ने उन्हें गोद ले लिया था. कल्पना की आँखें विस्मय से फैली रह गयीं.

अगले अंक के लिये कहानी लिखने का चित्र हमें रवि कुमार जी ने बनाकर भेजा है. इस चित्र पर कहानी लिखकर हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दीजिये -

# <u>मां</u>

लेखिका एवं चित्रकार - निहारिका झा

तेरा मेरा अटूट है बन्धन

तुझमें मैं हूं, मुझमें तू हैं

तूने मुझको जन्म दिया है

स्नेह नीर से सिंचित करके

मुझपर यह उपकार किया है

तेरे निश्छल प्यार पे हे मां

हरदम अपना शीश झुकाऊं

मां मेरी है इक अभिलाषा

जन्मों तक तुझसे बंध जाऊं

# <u>चिंकू चूहा</u>

लेखक - द्रोण साहू

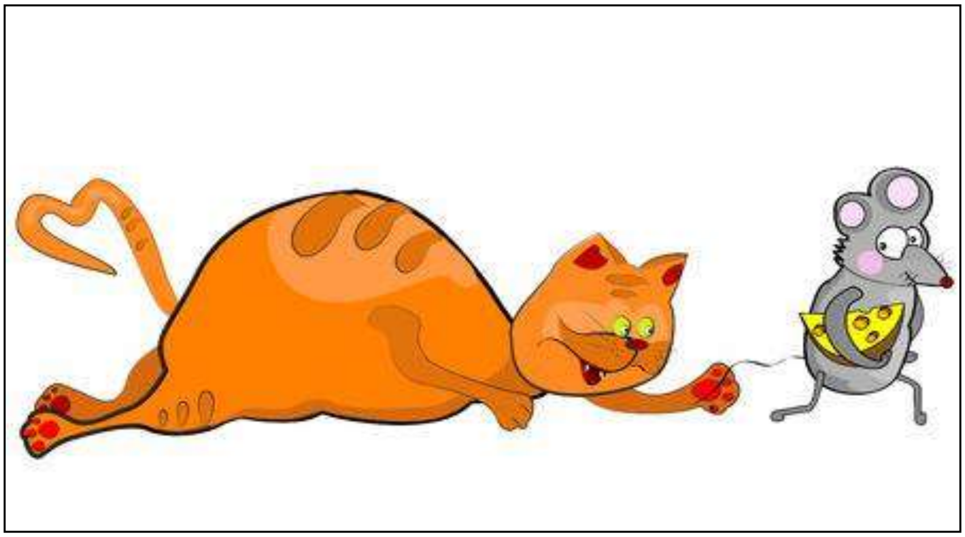

कहीं एक बिल में रहता था,

रिंकू चूहा, चिंकू चूहा ।

दुनिया देखूँ - सोचा दिल से,

निकल पड़ा वह अपने बिल से ।

बाहर दुनिया बड़ी अनोखी,

अब आपनी आंखों से देखी ।

एक जीव था बड़ा कमाल,

लंबी पूँछ, मुलायम बाल ।

पीछे से उसकी माँ बोली,

मत कर उससे हँसी-ठिठोली ।

उसके पास कभी मत जाना,

हम हैं उसका बढ़िया खाना।

यह सुंदर है देवी जैसी,

पर है बिल्ली शेर की मौसी।

# <u>वृक्ष</u>

लेखिका - अंजूलता भास्कर

प्रकृति  की शान हैं |

वृक्ष  हमारी जान हैं ||

प्रकृति हमको है पुकारती |

वृक्ष लगाकर करो आरती ||

सूख रही है पावन धरा |

वृक्ष लगाकर करो हरा ||

सबको वृक्ष लगाना है |

जीवन सुखी बनाना है ||

# मुन्नी चली स्कूल

लेखक - प्रकाश कुमार बंजारे

गर्मी की छुट्टी खत्म सोचकर, मुन्नी हुई उदास

आंसू आने लगे आंख में, फूले-फूले से थे गाल ।

उसे देखकर मम्मी बोलीं - मामा की है याद सताती,

या फिर रसगुल्ले के थाल ?

मुन्नी रोते रोते बोली - पढ़ा लिखा सब भूल गई हूं

नहीं जाऊंगी मां, स्कूल ।

मम्मी उससे हंसकर बोलीं- स्कूल अगर तुम जाओगी,

पढ़-लिखकर के नाम करोगी, दुनिया पर तुम छाओगी।

सोच समझकर मुन्नी बोली-हो गई मुझसे भारी भूल,

अब मुझसे ना कहना कुछ भी, यह देखो मैं, चली स्कूल

# <u>नांव लिखाले</u>

लेखक - रघुवंश मिश्रा

नाव लिखाले तै स्कूल जाए बर ।

बनी भूति करत म पहा जाही उमर हर ।

गली गली गूरूजी मन घूमत हे ।

स्कूल लाये बर नाव लिखत हे ।।

तोर मन म का चिज के हावय डर ।

नाव लिखाले तै स्कूल जाए बर ।

पास पडोस के संगी संगवारी ।

मन म भरके उमंग भारी ।।

बस्ता लेके अपन छोड़ दिहिन घर ।

नाव  लिखाले तै स्कूल जाए बर ।

पढ़े लिखे म गियान पाबे ।

जग म आपन नाव कमाबे ।।

दाई ददा के सपना ल पूरा कर ।

नाव  लिखाले तै स्कूल जाए बर ।

# <u>मेरी फुलवारी</u>

लेखक - मो. शम्स तबरेज़ आलम

शाला के आंगन में बच्चों की क्यारी

यही है मेरी फुलवारी

बरसात के आते ही, क्यारी में फूल खिल गए

कुछ जाने कुछ अनजाने मिल गए

ए ‘‘शम्स’’ निकल अपनी रोशनी बिखेर

छिपकर बैठा रहा तो हो जाएगी देर

अब सजानी है अपनी फुलवारी

चहक उठे जिससे अपने आंगन की क्यारी

# <u>विज्ञान - इंद्रधनुष</u>

लेखक - दिलकेश मधुकर

परावर्तन, पूर्ण आन्तरिक परावर्तन तथा अपवर्तन व्दारा वर्ण विक्षेपण का सबसे अच्छा उदाहरण इन्द्रधनुष है. बरसात के मौसम में जब पानी की बूँदे सूर्य पर पड़ती हैं तब सूर्य की किरणों का विक्षेपण ही इंद्रधनुष के सुंदर रंगों का कारण बनता है. आकाश में संध्या के समय पूर्व दिशा में तथा प्रात:काल पश्चिम दिशा में, वर्षा के पश्चात् लाल, नारंगी, पीला, हरा, आसमानी, नीला, तथा बैंगनी रंगों का एक विशालकाय वृत्ताकार वक्र कभी-कभी दिखाई देता है. यही इंद्रधनुष कहलाता है.

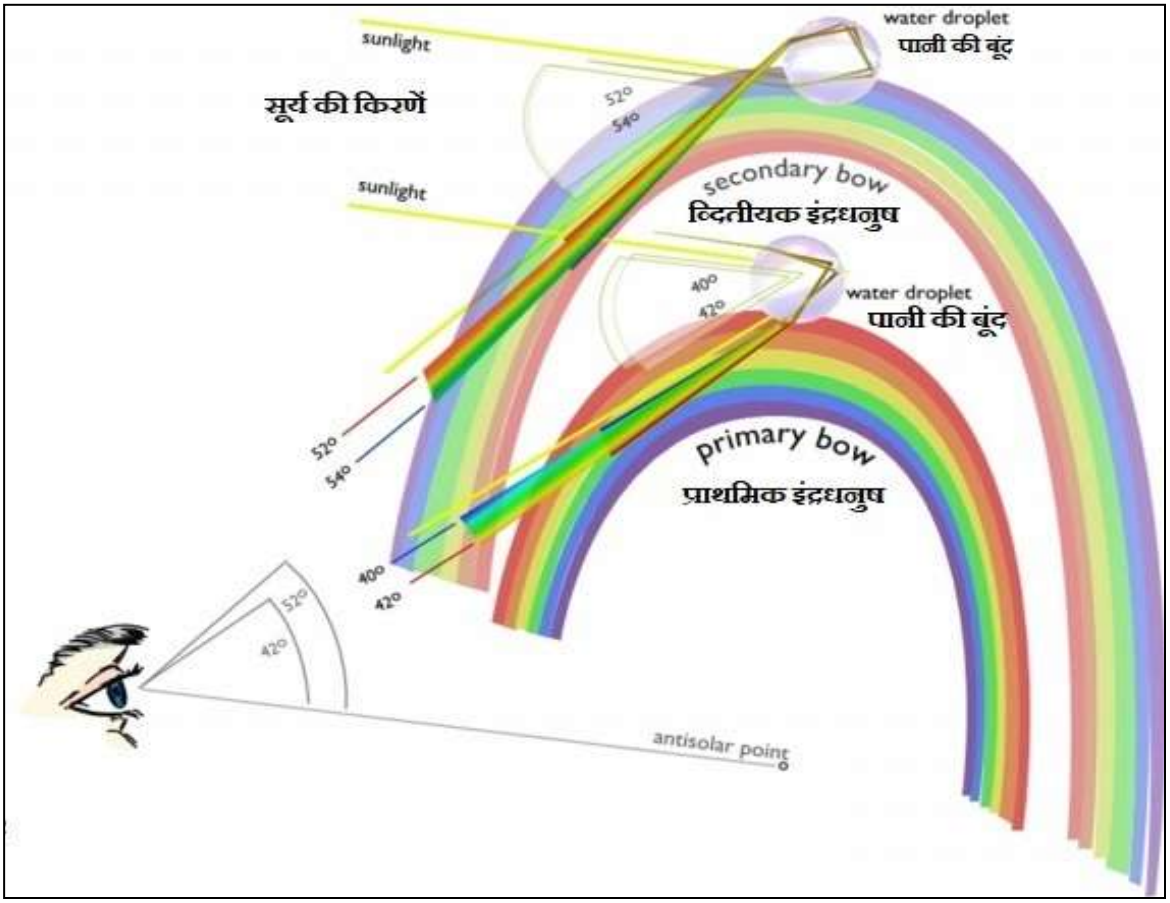

इन्द्रधनुष दो प्रकार के होते हैं - प्राथमिक एवं व्दितीयक.

**<u>प्राथमिक इंद्रधनुष</u>** - जब वर्षा की बूँदों पर आपतित होने वाली सूर्य की किरणों का दो बार अपवर्तन व एक बार परावर्तन होता है, तो प्राथमिक इन्द्रधनुष का निर्माण होता है. प्राथमिक इन्द्रधनुष में लाल रंग बाहर की ओर तथा बैंगनी रंग अन्दर की ओर होता है. अन्दर वाली बैंगनी किरण आँख पर 40°8' तथा बाहर वाली लाल किरण आँख पर 42°8' का कोण बनाती है.

**<u>व्दितीयक इन्द्रधनुष</u>** - जब वर्षा की बूँदों पर आपतित होने वाली सूर्य की किरणों का दो बार अपवर्तन व दो बार परावर्तन होता है, तो व्दितीयक इन्द्रधनुष का निर्माण होता है. इसमें बाहर की ओर बैंगनी रंग एवं अन्दर की ओर लाल रंग होता है. बाहर वाली किरण आँख पर 54°52' का कोण तथा अन्दर वाली किरण 50°8' का कोण बनाती है. व्दितीयक इन्द्रधनुष प्राथमिक इन्द्रधनुष की अपेक्षा कुछ धुँधला दिखलाई पड़ता है.

वर्ण-विक्षेपण के रंग - नीचे से ऊपर के क्रम में - बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी और लाल. इसे हम “बैंनी आह पीनाला” के रूप में याद कर सकते हैं.

## सामान्य ज्ञान

## जीव-जन्तुओ से जुड़ी गजब की रोचक जानकारी

संकलनकर्ता - दिलकेश मधुकर

1. कछुआ को सबसे ज्यादा जिन्दा रहने वाला प्राणी माना जाता हैं. कोलकाता के अलीपुर चिड़ियाघर में अव्देता नाम के कछुए की मौत साल 2006 में हुयी थी. उस समय उस कछुए की उम्र 255 साल थी.

2. हाथी पानी की महक को 5 किलोमीटर दूरी से भी सूंघ सकता हैं. हाथी के कान चाहे बड़े क्यों न दिखाई देते हों, लेकिन उसमे सुनने की शक्ति कम होती हैं. वह सुनने के लिए अपने पैरो की मदद लेते हैं.

3. घोड़े कभी भी उल्टी नहीं करते हैं. जमीन पर रहने वाले जानवरों में घोड़े की आँखे सबसे बड़ी मानी जाती हैं.

4. बकरी की आँखे 360 डिग्री एंगल तक देख सकती हैं. यानि की बकरी अपने चारो तरफ और अपने ऊपर की ओर भी देख सकती हैं.

5. समुंदरी घोड़ा असल में घोड़ा नहीं हैं, बल्कि यह मछली हैं. घोड़े की तरह मूंह होने के कारण इसे सी हॉर्स कहा जाता हैं. सबसे रोचक बात यह हैं की नर ही बच्चों को जन्म देता हैं. क्योंकि मादा सी हॉर्स, नर सी हॉर्स की थैली में अपने अंडे डाल देती हैं. उसी थैली में 10 दिन से लेकर 6 महीने के समय में बच्चों का जन्म होता है.

6. बिच्छू एक ऐसा प्राणी हैं जो जीवन में सिर्फ एक बार ही बच्चे पैदा करता है और बच्चे पैदा करने के बाद उसकी मौत हो जाती हैं.

7. गोरिल्ला हर दिन में तकरीबन 14 घंटे तक सोता है. अगर किसी मनुष्य को सर्दी-जुकाम हुआ है तो उसे गोरिल्ला से मिलने नहीं दिया जाता है, क्योंकि उसके संपर्क में आते ही गोरिल्ला को भी सर्दी-जुकाम हो सकता है.

8. कौवे किसी का चेहरा भूलते नहीं हैं. इसका मतलब यह हैं की कौवे को अगर आप पत्थर मार कर चले गये तो उसने आपको देख लिया तो अगली बार जब आप उसके सामने आयेंगे तो वह आपको तुरंत पहचान लेगा.

9. शहद की मक्खियों का मोम मलहम, बाम, पोलिश, मोमबत्ती, कॉस्मेटिक आदि बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता हैं.

10. मगरमच्छ अपनी जीभ बाहर नहीं निकाल सकता. वह अपनी जुबान को हिला भी नहीं सकता और न ही कुछ चबा सकता है. उसका पाचन रस इतना शक्तिशाली होता हैं की लोहे की कील को भी पचा सकता है.

11. हमिंगबर्ड एकमात्र ऐसा पक्षी है जो उलटी दिशा में भी उड़ सकता है.

12. उल्लू अपनी आँखों को इधर उधर नहीं घुमा सकते जबकि वो अपनी गर्दन और सिर को 270° तक घुमा सकते हैं.

13. कुत्तों में सूंघने की शक्ति मनुष्यों से 40 गुणा ज्यादा होती है.

14. जिराफ की जीभ इतनी ज्यादा लम्बी होती हैं, जिससे वह अपने कान भी साफ़ कर लेता है.

15. कॉकरोच की आंखें उसके सिर के ऊपर होती हैं. अगर कॉकरोच का सिर काट दिया जाये तो भी यह कई दिनों तक जिन्दा रह सकता है.

# <u>चुटकुले</u>

संकलनकर्ता - हिमांशु मधुकर

टीचर- जो मेरे सवाल का सही जवाब देगा वो घर जा सकता है.
उसी वक़्त पप्पू ने अपना बैग बाहर फेक दिया.
टीचर- वो बैग किसने फेंका?
पप्पू - मैने..अब मैं घर जाऊं???

टीचर - इतने दिनों से कहाँ थे?
पप्पू - बर्ड फ्लू था!
टीचर - पर ये तो बर्ड को होता है!
पप्पू (गुस्से में) - इंसान समझा ही कहाँ है आपने, रोज़ तो मुर्गा बनाते हो!

पापा - बेटा, अमेरिका मे 15 साल के बच्चे भी अपने पैरों पे खडे हो जाते हैं.
बेटा: लेकिन पापा भारत मे तो एक साल का बच्चा भागने भी लगता है.

एक बुजुर्ग व्यक्ति- बेटा, कैसे हो?
बच्चा- ठीक हूं.
बुजुर्ग- पढ़ाई कैसी चल रही है?
बच्चा- बिलकुल आपकी जिंदगी की तरह.
बुजुर्ग- मतलब?
बच्चा- भगवान भरोसे.

एक चोर - चोरी कर के, घर से जा रहा था. तभी घर के बच्चे की आँख खुल गई.
बच्चा बोला - स्कूल बैग भी ले जा, वरना शोर मचा दूँगा.

# पहेलियां

संकलनकर्ता - कु. सृष्टि मधुकर

(1) कल बनूं धड़ के बिना, मल बनूं सिर हीन।
पैर कटे थोड़ा रहूं ,अक्षर हैं कुल तीन।।

उत्तर :- कमल

(2) मध्य कटे तो सास बन जाऊं,
अंत कटे तो सार समझाऊं।
मैं हूं पक्षी, रंग सफेद,
बताओ मेरे नाम का भेद।

उत्तर :- सारस

(3) पूंछ कटे तो सीता, सिर कटे तो मित्र।
मध्य कटे तो खोपड़ी, पहेली बड़ी विचित्र।।

उत्तर :- सियार

(4) सिर काटो तो तोला जाऊं,
पैर कटे तो वृक्ष कहलाऊं ।
कमर कटे तो जंगल जानो,
जरा मुझे तो तुम पहचानो।।

उत्तर :- बटन

(5) प हटे तो लगता है कोड़ा,
नमक साथ में तीखा थोड़ा।
खाने में यह सबको भाए,
खाते ही सबका मन हर्षाए।।

उत्तर :- पकोड़ा

# <u>छत्तीसगढ़ी हाना</u>

संकलनकर्ता - रघुवंश मिश्रा

(1) बेंदरा के कूदे ले डारा नई टूटै - सही व्यक्ति के काम करने से काम नही बिगड़ता

(2) पढ़हे मनखे पढ़हे बर सीखै, मुंशी बन घसीटा लीखै - अपने काम पर इतराना

(3) रोनहा लइका के मुंह चिन्हाउल - चेहरा देखकर आदत जान लेना

(4) तोर-मोर यारी, नई लगे चिन्हारी - समान काम करने वालों के बीच लेन-देन नहीं होता

(5) दूहे के जब पारी आइस जब गाय के सुरता आइस - काम निकलवाने के लिए किसी को याद करना

(6) जब-जब आफत में जकड़े तब-तब बहुरिया के कान पकड़े - अपनी गलती के लिए दूसरे को दोष देना

(7) दीनबंधु जय दीनानाथ कहे म नई होवथ सनाथ - कहने भर से काम पूरा नहीं होता

(8) बाहिर फेंके ले परही मार मुड़ के कचरा घर में डार - घर की समस्या घर मे ही सुलझा लेना चाहिये

(9) बेअक्कल उजड्ड औलाद गदहा कस बोझा लाद - व्यर्थ बात पर चिंता करना

# Chubby Cheeks

Chubby cheeks, dimple chin,
Rosy lips, teeth within,
Curly hair, very fair,
Eyes are blue, lovely too,
Teacher's pet, is that you?
Yes, Yes, Yes!

## कला - माचिस की जली तीलियों से आकृतियां बनाना

कभी-कभी अनुपायोगी और व्यर्थ समझी जाने वाली सामग्री से बड़ी सुंदर कलाकृतियां बनाई जा सकती हैं. नीचे के चित्र में जली हुई मासिच की तीलियों को कागज़ पर चिपकाकर और कागज़ के कुछ हिस्से पर पैंसिल से ड्राइंग बनाकर बहुत सुंदर लड़की की आकृति बनाई गई है. तुम इसी प्रकार माचिस की जली हुई तीलियों को चिपकाकर और भी बहुत सारी सुंदर आकृतियां बना सकते हों और उन्हें अपने घर या स्कूल की दीवाल पर लगा सकते हो. प्रयास करके देखों.

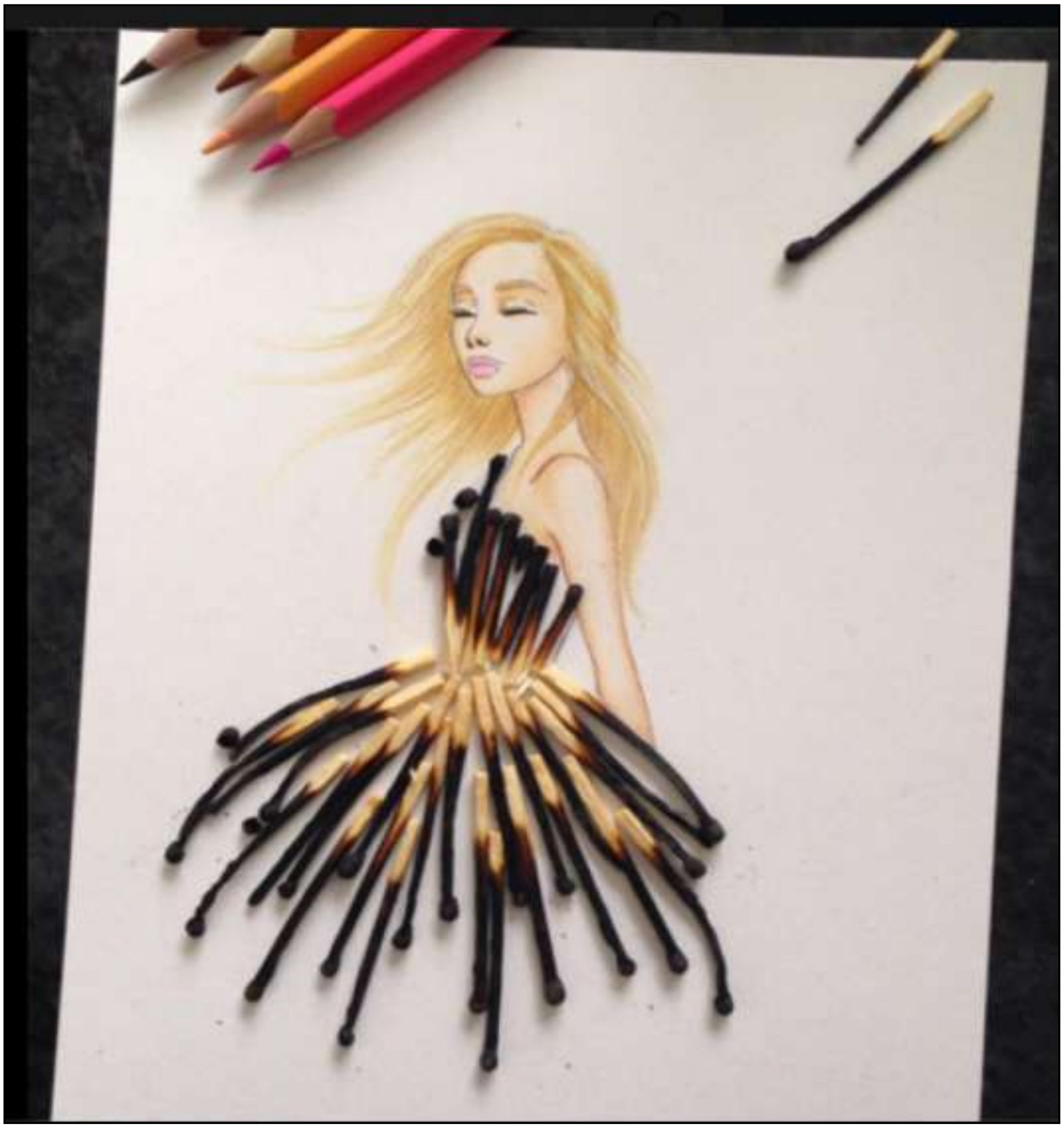

## वर्ग पहेली

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 छू | | | | 2 चुँ |
| 3 भाँ | 4 | | | 5 ध | | |
| | रि | | 6 क | | ज़ो | री |
| 7 अ | | न | | न | | |
| | ह | | ठी | | 8 दं | |
| 9 सि | | क | | | भ | |
| | | | 10 ल | | | ना |

**बाएँ से दाएँ**

**3. पहचानना; ताड़ना 6. शक्ति कम होना 7. नीचे की ओर झुकने की क्रिया, पैर पड़ना**

**9. सिनकने की क्रिया या भाव 10. झपटकर या तेज़ी से आगे बढ़ना, पाने के लिए हाथ बढ़ाना**

**ऊपर से नीचे**

**1. स्पर्श करना 2. दुपट्टा; चुनरी 4. एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने का साधन; (ट्रांसपोर्ट)**

**5. हवा फूँकने का काम, धौंकना 6. बाँस की पतली लचीली फट्टी जिससे टोकरी या पंखे आदि बनाए जाते हैं 8. पाखंडी व्यक्ति; कपटी; वंचक**

## उत्तर

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 छू | | | | 2 चुँ |
| 3 भाँ | 4 प | ना | | 5 ध | | द |
| | रि | | 6 क | म | ज़ो | री |
| 7 अ | व | न | म | न | | |
| | ह | | ठी | | 8 दं | |
| 9 सि | न | क | | | भ | |
| | | | 10 ल | प | क | ना |